अश्वपरीक्षा

राजराजेन्द्र कर्नल

मालोजीराव नृसिंहराव शितोले

राजराजेन्द्र कर्नल

मालोजीराव नृसिंहराव शितोले.

प्रकाशक का निवेदन ।

विद्यामन्दिर—प्रकाशन केवल दो उद्देश्यों को लेकर चला है। एक तो यह कि सांस्कृतिक तथा साहित्य चेतना की दृष्टि से सुप्त-प्राय इस प्रदेश में माँ भारती के मन्दिर की सजग उपासना का प्रारंभ हो, और दूसरा यह कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के भाण्डार को अधिकाधिक पूर्ण बनाया जाय। यद्यपि आज सम्पूर्ण परिस्थितियाँ इस आयोजन के विपरीत ही हैं, फिर भी हमें जो स्वागत तथा प्रोत्साहन हिन्दी-जगत् से मिला है वह बहुत आशाप्रद है तथा उससे हमारा अत्यधिक उत्साहवर्धन हुआ है। इसके लिए हम अपने सहायकों के अत्यन्त कृतज्ञ हैं।

राजराजेन्द्र कर्नल शितोले साहब की इस प्रकाशन सँस्था पर बहुत अधिक कृपा रही है। सच तो यह है कि उनके सक्रिय संरक्षण के बिना हम यह सेवा कर भी सकते या नहीं इसमें सन्देह है।

राजराजेन्द्र संस्कृत तथा हिन्दी को हृदय से प्रेम करते हैं और संस्कृत के गौरव के उद्घाटन तथा हिन्दी के प्रचार और प्रसार के लिए उहोंने बहुत कुछ किया है। उनकी अनेक पुस्तकें तथा आयोजन हिन्दी संसार के भेंट करते हमें बहुत हर्ष का अनुभव

होता है। यह किसी भी हिन्दी प्रेमी का पवित्र कर्तव्य है कि वह ऐसे उत्कृष्ट भारतीय संस्कृति और हिन्दी भाषा के प्रेमी को हिन्दी-संसार से सम्बद्ध करदे।

शितोले साहब को अश्वपरीक्षा और अश्वारोहण का बहुत अच्छा और सक्रिय ज्ञान है। अभी आपने अश्वपरीक्षा के सम्बन्ध में अनेक प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों का संग्रह तथा अध्ययन किया है। उसी के फल स्वरूप यह पुस्तक प्रणीत हुई है। इस पुस्तक में अश्वपरीक्षा के प्रारंभिक सिद्धान्त अत्यन्त सरल शैली में दिये गए हैं। इसके द्वारा अश्वपरीक्षा के प्रारंभिक सिद्धान्त तो ज्ञात होंगे ही, साथ ही दूसरा उद्देश्य यह भी है कि इसके पाठकों में भारतीय अश्वशास्त्र के जानने की इच्छा जागरित हो। राजराजेन्द्र कर्नल शितोले साहब का विचार एक सर्वांग पूर्ण 'अश्वशास्त्र' प्रकाशित करने का है। भगवान उनको इस संकल्प में सफलता प्रदान करे।

इस निवेदन के साथ हम अपनी यह पाँचवीं अंजलि हिन्दी-मन्दिर की देहली पर चढ़ाते हैं।

—प्रकाशक

विषय सूची

१. प्रारंभिक ७

२. कुछ दूषित चिन्ह ११

३. अश्व-चिन्ह १३

४. प्रदेश-निर्देश २०

५. बिन्दु-परीक्षा २१

६. अश्वशरीर-परीक्षा.... .... २२

७. दन्त-परीक्षा २६

८. राजा अथवा देवता की सवारी के अश्व के गुण. २९

९. अश्व की कुछ जातियाँ ३१

१०. अश्व सम्बन्धी कुछ देश (जिनका उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में हैं) ३२

११. चित्र तथा उनके विवरण:—

चित्र १. दस आवश्यक ध्रुवावर्त ३४

चित्र २. बीस शुभावर्त आवश्यक नहीं हैं,
यदि हों तो उत्तम हैं ३६
चित्र ३. निंद्यावर्त ७६-(केवल १ से २६ तक). ३८
चित्र ४. निंद्यावर्त ७६—(२७ से ७६ तक). ४०
चित्र ५. अस्थि व स्नायु सम्बन्धी चित्र ४४
चित्र ६. शुद्ध शरीर का आकार ४६
चित्र ७. वय के प्रथम वर्ष में दाँत ४७
चित्र ८. वय के दूसरे वर्ष में दाँत ४८
चित्र ९. वय के तीसरे वर्ष में दाँत ४९
चित्र १०. वय के चौथे वर्ष में दाँत ५०
चित्र ११. वय के पाँचवें वर्ष में दाँत ५१
चित्र १२. वय के छटवें वर्ष में दाँत ५२
चित्र १३. वय के सातवें वर्ष में दाँत ५३
चित्र १४. वय के आठवें वर्ष में दाँत ५४
चित्र १५. वय के दसवें वर्ष में दाँत ५५

अश्व-परीक्षा

॥ श्री नृसिंह प्रसन्न ॥

प्रारंभिक

कालगति से सर्व-साधारण में अश्व-परीक्षा का ज्ञान दिन पर दिन कम हो रहा है, परन्तु व्यवहार में अश्व की वाहन के रूप में आवश्यकता पूर्णतया कभी नहीं मिट सकती; अतएव यह संभव नहीं दिखता कि अश्वजाति समूल नष्ट हो जाय अथवा उसका मनुष्य के लिये उपयोग न रहे। प्रत्येक समय में किसी न किसी रूप में मनुष्य को अश्व की आवश्यकता रहेगी ही। कुछ समय पूर्व अश्व का उपयोग प्रधान वाहन के रूप में होता था। अब उसका उपयोग घुड़दौड़ तथा पोलो के खेल आदि में किया जाता है। समय के प्रभाव से अब पैट्रोल मिलना अत्यन्त दुर्लभ हो चला है। अतएव मोटर के अभाव में अब पुनः अश्व की आवश्यकता बढ़ चली है। अब एक बार फिर हमें घोड़े के अच्छे बुरे की पहचान करने की जानकारी प्राप्त

करने की उपयोगिता का अनुभव होने लगा है। इसी की पूर्ति का लघु प्रयास इस पुस्तक में है।

अश्व-शास्त्र अत्यन्त विस्तृत विषय है और उसके अनेक अंग-उपांग हैं। परन्तु इस पुस्तक में हमारा ध्येय सम्पूर्ण अश्व-शास्त्र का विवेचन नहीं है। हम यहाँ केवल अश्वों के शुभाशुभ लक्षणों तथा उनकी उपयोगिता पर ही विचार करेंगे, और इस बात का क्रियात्मक विवरण देने का प्रयत्न करेंगे कि अश्वों की परीक्षा किस प्रकार की जाय। आशा यह है कि इस पुस्तक की सहायता से, इसके पाठक को यह साधारण जानकारी हो जायगी कि अश्वों की परीक्षा किस प्रकार की जाय तथा उनकी परीक्षा करते समय किन-किन बातों पर ध्यान दिया जाय।

इस पुस्तक में प्रारंभिक बातें रूप-रेखा के रूप में ही दी गई हैं। यह भी बतला देना उचित है कि यह पुस्तक प्राचीन भारतीय अश्व-शास्त्र के आधार पर है। विस्तृत ज्ञान के लिए निम्न-लिखित प्राचीन संस्कृत

ग्रन्थों का अध्ययन उपयोगी होगा, जिनके आधार पर यह पुस्तक लिखी गई है:—

१. बहाडकृत शालिहोत्र ।

२. जयदत्तकृत शालिहोत्र ।

३. नकुलकृत शालिहोत्र ।

४. वीरमित्रोदयकृत शालिहोत्र ।

५. शालिहोत्र संहिता ।

६. अश्वायुर्वेद ।

उक्त ग्रन्थों के इस पुस्तक से सम्बन्धित मूल श्लोक यथास्थान दिये गए हैं। आज दुर्भाग्य से संस्कृत भाषा का ज्ञान सर्व-साधारण को नहीं रहा, इसलिए इन श्लोकों का उपयोग अधिक होगा यह नहीं कहा जा सकता। उनका अनुवाद भी दे दिया गया है। हमारे पूर्वजों ने अनेक उपयोगी विषयों का गंभीर ज्ञान देववाणी संस्कृत के ग्रन्थों में प्रचुर परिमाण में भर दिया है। जब तक हम संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा जागृत नहीं करेंगे तब तक हम अपनी उस अमूल्य सम्पत्ति से वंचित ही रहेंगे।

हमारा अश्वशास्त्र प्राचीन काल में इतने पूर्णत्व को पहुँच गया था कि अश्वों के शरीर के केवल चिन्हों से ही हमें उनकी आयु, वय, स्वभाव तथा गुणों का ज्ञान हो जाता था।

यदि इस पुस्तक द्वारा इस विषय की गंभीर खोजकर हमारे पूर्वजों की निधि को सर्व-साधारण के लिए सुलभ करने की भावना को उत्तेजन मिल सका तो हम अपने प्रयास को सफल समझेंगे।

कुछ दूषित चिन्ह

अश्व के शरीर में कुछ चिन्ह व्यवहार में दूषित माने जाते हैं। यह दूषित चिन्ह शालहोत्रियों में इतने अधिक प्रचलित हैं कि यद्यपि हमें उनके विषय में कोई श्लोक ज्ञात नहीं हो सके तथापि उनका इस पुस्तक में देना उपयोगी ज्ञात होता है:—

(१) श्याह तालू

घोड़े के तालू के मध्यभाग में यदि काला बिम्ब हो अथवा तालू का मध्यभाग कहीं भी काला हो तो वह दोष माना जाता है और उसे 'श्याह तालू' कहते हैं।

(२) अर्जत

एक अथवा तीन पैर श्वेत होना भी दोष माना गया है और इसे 'अर्जत' कहते हैं।

(३) सितारा पेशानी

कपाल पर यदि शुभ्र बिम्ब हो और वह इतना छोटा हो कि अँगूठे के नीचे ढक जाय तो उसे 'सितारा पेशानी' दोष कहते हैं।

(४) दल-भंजन

मुख पर के श्वेत पट्टों में यदि शरीर के रंग का बिम्ब हो तो उसको 'दल-भंजन' दोष समझना चाहिये।

(५) स्तनी

अश्व के मूत्रस्थान के समीप बैल के समान स्तन हों तो उसे 'स्तनी' कहते हैं।

यदि यह स्तन छोटे हों तो उसको 'मणि' कहते हैं।

(६) ताखी

यदि अश्व के दोनों नेत्र एक से न हों तथा उनका रंग पृथक् पृथक् हो तो उसे 'ताखी' समझना चाहिए।

अश्व-चिन्ह

आजकल लोगों को अश्व-चिन्हों तथा उनके परिणामों पर विश्वास नहीं रहा है। इस दिशा में भी वे पाश्चात्य संसार का अंधानुकरण मात्र करते हैं। यूरोप में अश्व-चिन्हों पर विश्वास नहीं करते, इसलिए उनका तर्क यह रहता है कि जब यूरोप में इन चिन्हों पर विचार करने से कोई हानि नहीं होती तो उन पर भी उसका कोई अनिष्ट परिणाम नहीं होगा। वैसे ऊपर से तो उनके इस तर्क में कुछ तथ्य-सा दिखाई देता है, परन्तु थोड़ा ध्यान से देखने से वह सारहीन ज्ञात होता है। यदि कोई जंगली मनुष्य सिंह की गुफा में निश्शंक होकर घुसे तो क्या इसका यह अर्थ लिया जायगा कि प्रत्येक जानकार मनुष्य को भी इस प्रकार व्याघ्र की गुफा में घुसना निरापद है ? ज्ञान के अभाव में अश्व-चिन्होंकी उपेक्षा करना ऐसा ही है और जानबूझ-कर उनपर ध्यान न देना कुछ इसी प्रकार की विलक्षण बुद्धि का परिणाम माना जायगा। अनिष्ट बात से अनिष्ट परिणाम होता अवश्य है परन्तु विषय के अज्ञान के

कारण उस अनिष्ट परिणाम के कारण की ओर हमारा ध्यान नहीं जाता। जिनको ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा है व जो पूर्ण लाभ उठाने के इच्छुक हैं वह अवश्य ही इन चिन्हों को जानकर उनसे लाभ उठाते हैं तथा उनकी हानि से बचते हैं।

यूरोप के लोग भी इस ओर बिलकुल विचार न करते हों ऐसा नहीं है। घुड़दौड़ के लिए घोड़े देखते समय उनके वंशवृक्ष, उनके शरीर के आकार तथा अस्थियों की रचना पर विशेष ध्यान दिया जाता है। वे लोग भी अपने प्राप्त-ज्ञान के अनुसार आचरण करते हैं। उन्हें हमारे उपयोगी शास्त्र का ज्ञान तथा अनुभव है ही नहीं। इसका यह तो परिणाम नहीं है कि भारतीय अश्व-शास्त्र अनुपयोगी तथा मिथ्या है। कहने का तात्पर्य यह है कि अश्व-शास्त्र का ज्ञान हमें अवश्य होना चाहिए। हमें अश्व-शास्त्र के अनुसार अश्व-चिन्ह, उनसे शुभाशुभ परिणाम अवश्य ज्ञात होने चाहिए। अतएव नीचे हम अश्व-चिन्हों के विषय में प्राचीन ग्रन्थों के कुछ उद्धरण अनुवाद सहित देते हैं:—

शालिहोत्र संहितायां रेखाध्याये

१. चतुरंगुलकं प्रोथं तत्र लेखास्तु लक्षयेत् ।
नानाकारविशेषास्तु तासु निर्वाण लक्षणम् ॥ ६ ॥

अर्थः—प्रोथ (नथुना) चार अंगुल का होता है व उस पर नाना प्रकार की रेखाएँ रहती हैं व इन रेखाओं से घोड़े की मृत्यु का अनुमान किया जा सकता है।

२. पाणौयथामनुष्याणां प्रोथेष्वेवतु वाजिनां ।
वक्ष्याम्यनुत्तमायुष्यं तदेवं ब्रुवतः शृणु ॥ ७ ॥

अर्थः—जिस प्रकार मनुष्य के हाथ पर की रेखाओं से मृत्यु का अनुमान किया जा सकता है उसी प्रकार घोड़े के नथुने पर जो रेखाएँ रहती हैं उन पर से उसकी आयु का अनुमान होता है। यह मैं कथन करता हूँ, सुनो।

आवर्ताध्यायः बहाडकृत शालिहोत्रे

३. अथाभिधास्ये प्रथमं ध्रुवाणा ।
फलंध्रुवत्वेन दशा विभागात् ॥

शुभाऽशुभानांचततः प्रमाणं ।
संस्थान भेदैर्हयरोमजानाम् ॥ १ ॥

अर्थः—सर्व प्रथम ध्रुवों का फल वर्णन करता हूँ । इन ध्रुवों के दस विभाग किए गए हैं । स्थानों के अनुसार उनके शुभाशुभ परिणाम का वर्णन करता हूँ । यह ध्रुव बालों से ही उत्पन्न होते हैं ।

४. एकः प्रपानेऽथललाट एको ।
द्वौमस्तके द्वावुरसिस्थितौच ॥
द्वौरंध्रयोर्द्वावुपरंध्रयोश्च ।
ध्रुवादशैते हयरोमजाःस्युः ॥ १४ ॥

अर्थः—प्रपान पर एक, ललाट पर एक, मस्तक पर दो, उरस्थल पर दो, रंध्र पर दो-दो, इस प्रकार घोड़े के केशों के इन दस भ्रमरों को 'ध्रुव' कहते हैं (देखिये चित्र १) ।

५. यथा दशैते ध्रुवरोमजाः स्युः ।
स्वस्थानभाजश्च तुरंगमाणां ॥

अन्येतथा नैव भवंति तज्ञै ।
ध्रुवत्वमेषांविनिगद्यतऽतः ॥ १८ ॥

अर्थः—यह दस भ्रमर घोड़े के शरीर पर जिस नियम से होते हैं व होना चाहिए यह बतलाया गया । आगे वर्णन किए हुए भ्रमर नियम से नहीं होते। अतः विद्वानों ने इन दस भ्रमरों को 'ध्रुव' अर्थात् 'स्थिर' नाम दिया है (देखिये चित्र २, ३ व ४)।

उक्त चिन्हों के समझने में सरलता हो इस हेतु से आगे परिशिष्ट में ४ चित्र दिये गए हैं। पहले चित्र में दस ध्रुवावर्त बतलाये गये हैं तथा उनके न होने से जो हानियाँ या अनिष्ट होते हैं वह भी लिख दिये गये हैं ।

दूसरे चित्र में २० शुभावर्त बतलाये गये हैं तथा उनके होने से जो लक्षण होते हैं वह भी लिख दिये गये हैं ।

तीसरे और चौथे चित्र में ७६ निंद्यावर्त दिखलाये गये हैं और उनके होने से जो अनिष्टकर प्रभाव होते हैं वह भी लिख दिये गए हैं ।

प्राचीन ग्रन्थों में इन चिन्हों के गुण दोषों का पूर्णतः विवेचन किया गया है। आगे हम केवल एक दोष का उदाहरण देते हैंः—

आवर्ताध्यायः बहाडकृत शालिहोत्रे

छत्रभंग [चित्र ४ (६७)]

६. ककुद्भवोयस्यचरोमजःस्यात् ।
पतिं निपात्य व्यसने निहंति ॥
सहान्वयंसार्धमनुत्तमांश्च ।
कुलस्यपुंसस्तुरंगांस्तथान्यान् ॥ ७० ॥

७. वित्तंसमग्राणिचवाहनानि ।
विनाशयेद्राज्यमितिस्वराष्ट्रात ॥
विसर्जनीयःसचजातमात्रो ।
दूरेण देयोद्विषतेऽथवाश्वः ॥ ७१ ॥

अर्थः—जिसके ककुदस्थान पर भ्रमर होता है वह अश्व अपने स्वामी को व्यसनाधीन बनाकर उसका नाश करता है, सन्तति का नाश करता है, अपने पास के अन्य अश्वों का भी नाश करता है, स्वामी के पिता का नाश करता है, राजा की तथा अपने स्वामी की

सब सवारियों का नाश करता है। अतएव ऐसे अश्व को उत्पन्न होते ही राज्य में से बाहर कर देना चाहिए अथवा शत्रु के घर भेज देना चाहिए।

इन दोषों को यथासंभव बचाना उचित है। परन्तु इसका एक अपवाद है। राजा के झण्डे के नीचे अश्व के दोषों पर ध्यान नहीं दिया जाता। राजा की सेना के लिए केवल दृढ़ शरीर देखना मात्र पर्याप्त है। परन्तु वहाँ भी 'छत्र-भंग' दोष तो अवश्य ही वर्जनीय है। उसका उपयोग किसी अवस्था में नहीं करना चाहिए।

प्रदेश-निर्देश

अश्वों की नसों आदि को भेदन करने की क्रिया भी प्राचीन समय में प्रचलित थी तथा उन्नत अवस्था में थी। इस क्रिया के द्वारा अश्व में अनेक गुण उत्पन्न किये जाते थे। परन्तु उसके लिए विशेष ज्ञान की आवश्यकता होती थीः—

प्रदेशनिर्देशाध्यायः बहाडकृत शालिहोत्रे

८. शिराव्यधेमर्मवधे विधौच।
व्रणाक्रिया यामपिमर्मसंधौ॥
स्थानानभिज्ञस्ययतो न सिद्धिः।
प्रदेश विज्ञान मतोवदामि॥ १॥

अर्थः—शिरा अथवा मर्म स्थान पर नश्तर लगाना अथवा उसे तोड़ना अथवा नश्तर लगाने या तोड़ने के पश्चात् की क्रिया करना उस व्यक्ति के लिए संभव नहीं है जिसे उपयुक्त प्रदेश (स्थान) ज्ञात नहीं हैं। अतएव अब आगे प्रदेश विज्ञान का कथन करता हूँ।

बिन्दु-परीक्षा

अश्व के शरीर पर जो बिन्दु होते हैं उनको पुष्प कहते हैं। उनके द्वारा भी घोड़े के शुभाशुभ का ज्ञान हो सकता है।

पुष्पाध्यायः बहाडकृत शालिहोत्रे

१. येबिंदवोहरिशरीर भवाभवंति।
पुष्पाणि लक्षणविदः कथयंतितानि॥
दंताग्रजानिखुर जानिचसप्तरात्रा।
त्तूर्णं दिशंतिविपुलार्थं फलानिभर्तुः॥ २॥

अर्थः—घोड़े के शरीर पर जो बिन्दु होते हैं उनको पुष्प कहते हैं। उन पुष्पों के लक्षण कहता हूँ। अश्व के दन्ताग्रों पर या खुरों पर यदि पुष्प हों तो वह सात रात्रि के भीतर ही अधिक तथा श्रेष्ठ फल देता है।

अश्वशरीर-परीक्षा

इस विषय का प्रारंभ हम एक उत्तम अश्व के शरीर का लक्षण देकर करेंगे:—

मिश्रलक्षणोध्यायः बहाडकृत शालिहोत्रे

१०. श्वेतो सिताक्षिखुरदंत गुदांड मेढ।
त्वक्केसरो निरुपमात जवोपपन्नः ॥
आवर्तवर्ण गति हेषित सत्वशोभा।
संस्थान पूजित तनुस्तुरगोह्यनर्घ्यः ॥ २ ॥

अर्थः—जो अश्व शुभ्र वर्ण का हो, जिसका मस्तक, खुर, दन्त, गुद, अंड, शिश्न, त्वचा तथा केश काले हों, जिसका वेग उपमा रहित हो, तथा जिसके अंग के भ्रमर, रंग, स्वर, गति, बल की शोभा तथा अवयवों का दृष्य अत्यन्त सुन्दर हो, उस अश्व को अमूल्य समझना चाहिए तथा वह पूजनीय है।

अश्व-शरीर-परीक्षा वय अथवा चिन्ह-परीक्षा से कम महत्व की नहीं है। परन्तु अश्व के शरीर सम्बन्धी

यदि कोई दोष हों अथवा उसके लेते समय वह दोष दृष्टि में न आवें तो वह हानिकारक ही होंगे ऐसा नहीं कहा जा सकता। जिस प्रकार सभी यह प्रयत्न करते हैं कि छोटी वय का घोड़ा प्राप्त हो, इसी प्रकार यह भी इच्छा स्वाभाविक है कि अश्व शारीरिक अवगुण रहित मिले। जिस उपयोग के लिए वाहन रखा जाता है वह उपयोग ही पूरा नहीं हो सकता यदि अश्व का शरीर दोष रहित नहीं है।

अस्थि तथा स्नायु सम्बन्धी जो दोष होते हैं उनका वर्णन आगे चित्र क्रमांक ५ में किया गया है।

शुद्ध शरीर के आकार का प्रमाण कैसा होना चाहिए यह चित्र क्रमांक ६ में दिखाया गया है।

अब नीचे वह बातें दी जाती हैं जिनका ध्यान साधारण परिक्षा करते समय रखना उचित है:—

१. खड़ा करने पर घोड़ा चौखट में ठीक बैठे (देखिए चित्र क्रमांक ६)

२. दुलकी में अपनी ओर आते समय जो अश्व पैर जमीन पर लगाते समय सिर

ऊँचा उठावे वह पैर लँगड़ा समझा जाय ।

३. दुलकी ढीली लगाम से चलाना चाहिए ।
४. दुलकी चलाते समय गर्दन ऊँची व छाती आगे निकली हुई होना चाहिए ।
५. खुरों के तलवे सपाट नहीं होने चाहिए ।
६. खुर कहीं भी फटा हुआ या सुकड़ा हुआ सा नहीं होना चाहिए ।
७. पैर के किसी भाग पर किसी प्रकार की सूजन नहीं होना चाहिए ।
८. घोड़े को थोड़ी देर जोर से दौड़ाकर खड़ा करना चाहिए और उसकी नाक के पास कान लगाकर शुद्ध श्वास की जाँच करना चाहिए ।
९. लिंगनाश ।
१०. पादधनुर्वात ।

११. पिछला पैर जमीन घसीटते हुए ले जाना ।

१२. पीठ पर बैठते ही या वहाँ पर दबाने से पीठ झुकाना ।

१३. हड्डी के ऊपर हड्डी बढ़ना (अध्यस्थि) ।

१४. अर्बुद ।

१५. खण्डा (पादक्षेपक—एक पैर लकवे से अशक्त होना) ।

१६. पंगुपक्षाघात (दोनों पैर लकवे से अशक्त होना) ।

१७. कटिशूल ।

१८. पादाक्षेपक ।

दन्त-परीक्षा

किसी अश्व की आयु जानने के लिए दन्त-परीक्षा का ज्ञान आवश्यक है। अश्व की आयु का ज्ञान होना भी अत्यन्त महत्व का विषय है। अश्व जिस कार्य के लिए लिया जाय उसके लिए समर्थ और शक्तिशाली नवीन अश्व ही उपयोगी होगा। इसलिए दन्त-परीक्षा का भी अत्यधिक महत्व है।

किस आयु में अश्व के दाँतों की क्या अवस्था होती है तथा उन पर कैसे चिन्ह होते हैं यह आगे चित्र ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३ तथा १४ से ज्ञात होगा।

अश्व का आयुमान ३२ वर्ष बतलाया गया है। यथाः—

आवर्ताध्यायः बहाडकृत शालिहोत्रे

११. द्वात्रिंदशद्वानि तरंगमायुः ।
पुरापुराणैर्मुनिभिः प्रणीतम् ॥ २ ॥

अर्थः—श्रेष्ठ मुनियों का ऐसा कथन है कि इस विषय के अधिकारी विशेषज्ञों के मत से घोड़े की आयु ३२ वर्ष की होती है।

आगे हम उन संस्कृत श्लोकों का उद्धरण देते हैं जिनमें अश्व की आयु पहचानने के लिए उपयुक्त लक्षण दिये गये हैं। इनके ज्ञान से अश्व की आयु समझने में बहुत सरलता होगी।

षड्भिर्दंतैः सिताग्रैर्भवतिहयशिशुस्त्रैः कषायैर्द्विरब्दः।
संदंशैर्मध्यमांतैः पतितसमुदितैस्त्रिश्चतुः पंचकाब्दः॥

संदंशानुक्रमेण त्रिकसमगुणिता कालिकापीतशुक्ला।
काचामाक्षीकशंखा वटचलनदो भांशितः स्यात् समृद्धिः॥

अर्थः—अश्व के मुख के नीचे के छै दाँतों पर उसकी वय-परीक्षा का आधार है। इन दाँतों के तीन भाग (मध्य, बाजू तथा अंत्य) होते हैं। जब ये छै दाँत एक पंक्ति में निकलते हैं उनका रंग दूध जैसा होता है। जब इन छै दाँतों का रंग कुछ मालिन होता है तो उसकी वय दो वर्ष की होती है। आगे जब यह दूध के दाँतों की तीनों जोड़ियाँ क्रमशः गिरकर उनके स्थान पर दूसरे स्थायी दाँत

उत्पन्न होते हैं तब अश्व की वय क्रमानुसार तीन, चार तथा पांच वर्ष की होती है। इस क्रम से दाँत के (मध्य, बाजू व अंत्य) चपटे भाग पर काले, पीले, सफेद, काँच जैसे, माणिक जैसे, शंख के रंग जैसे धब्बे निकल आएँ तो वह क्रमशः ६ से ८, ९ से ११, १२ से १५, १५ से १७, १८ से २० तथा २१ से २३ वर्ष का होता है। तदनंतर प्रत्येक जोड़ी में चीर पड़ने पर वह घोड़ा २७ से २९ वर्ष का होता है और प्रत्येक जोड़ी गिरने पर वह ३० से ३२ वर्ष का होता है।

राजा अथवा देवता की सवारी के अश्व के गुण

---

१. ललाट पर या वक्षः स्थल पर होनेवाले चिन्हः—

(१) अर्धचंद्राकार।

(२) पूर्णचंद्राकार।

(३) ध्वजाकार।

(४) धनुषाकार।

(५) शंखाकार।

(६) चक्राकार।

(७) श्रुवाकार।

(८) स्वस्तिकाकार।

(९) वर्धमानाकार।

(१०) श्रीवृक्षाकार।

(११) गदाकार।

(१२) खड्गाकार।

(१३) वंदनवाराकार।

(१४) लांगूलाकार।

(१५) मत्स्याकार।

(१६) युवाकार।

२. पहले किसी ने उस पर सवारी न की हो।

३. एक रंग का हो और यदि पूरा श्वेत हो तो बहुत उत्तम।

४. मिश्रित रक्त का (क्रॉस ब्रीड) न हो।

अश्व की कुछ जातियाँ

१. बालोत्रा ।

२. काठियावाड़ी ।

३. मारवाड़ी ।

४. घोरपड़ी ।

५. देशी ।

६. भिवरघड़ी ।

अश्व सम्बन्धी कुछ देश ।

१. तायिक ।
*२. पारसिक—परशिया ।
३. कोंकण ।
४. प्रष्टात ।
५. उरूजान ।
*६. कीर—कश्मीर ।
*७. तुरुष्क—टर्की ।
८. माटज ।
९. कटज ।
†१०. सैंधव-सिंध ।
‡११. सारस्वत-द्वाव ।
१२. शंभल ।
१३. कुल ।

१४. जद्र ।
*१५. टंकण—दक्षिण ।
१६. पूर्व व दक्षिण देश ।
$१७. गवरास—गोवा ।
‡१८. बनाश्व—राजपूताने में बनाश्व नदी का प्रदेश ।
१९. राजसुली ।
*२०. ताजिका-अरेबिया ।
२१. सूरश्रान ।
२२. तुषार—तिब्बत ।
२३. गोजिका ।
२४. भांडित ।

---

*हिन्दी शब्द सागर ।
†आपटेकृत संस्कृत अंग्रेजी कोष ।
‡कल्याण मासिक, महाभारत अंक ।
$ The Geographical Dictionary of Ancient and Mediaval India by Nundolal Dey, 1899 A. D.

चित्र तथा उनके विवरण

चित्र १
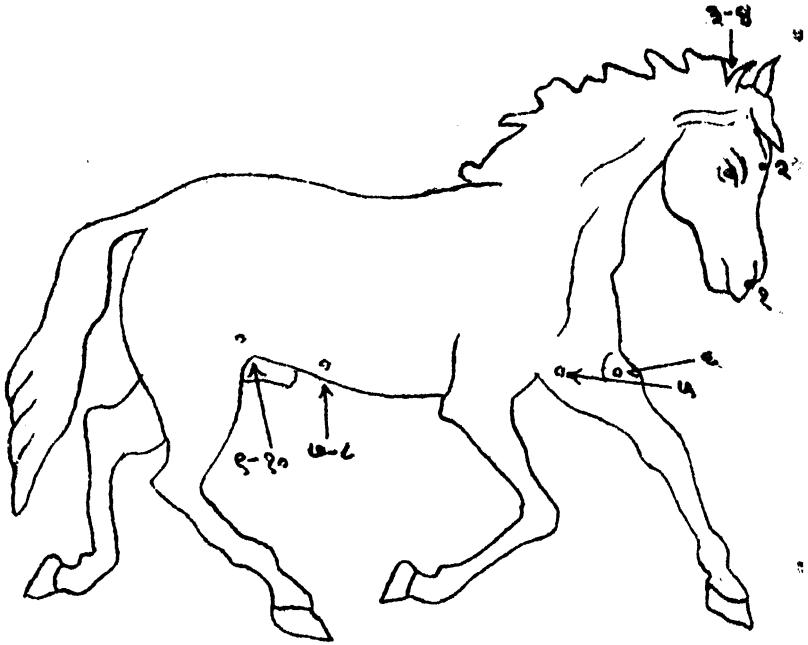
दस आवश्यक ध्रुवावर्त ।

दस आवश्यक ध्रुवावर्त न होने से होनेवाले दोष।

ध्रुवावर्त में से प्रत्येक यदि अपने स्थान पर न हो तो निम्न-लिखित दोष होते हैं:—

१ प्रपाण पर—कुल नाश।

२ ललाट पर—बुद्धि नाश।

३—४ मस्तक पर—शिरोरोग।

५—६ उरस्थल पर—पुत्रनाश।

७—८ रंध्र पर—पेट की पीड़ा।

९-१० उपरंध्र पर—धनक्षय।

चित्र २

बीस शुभावर्त आवश्यक नहीं हैं, यदि हों तो उत्तम हैं।
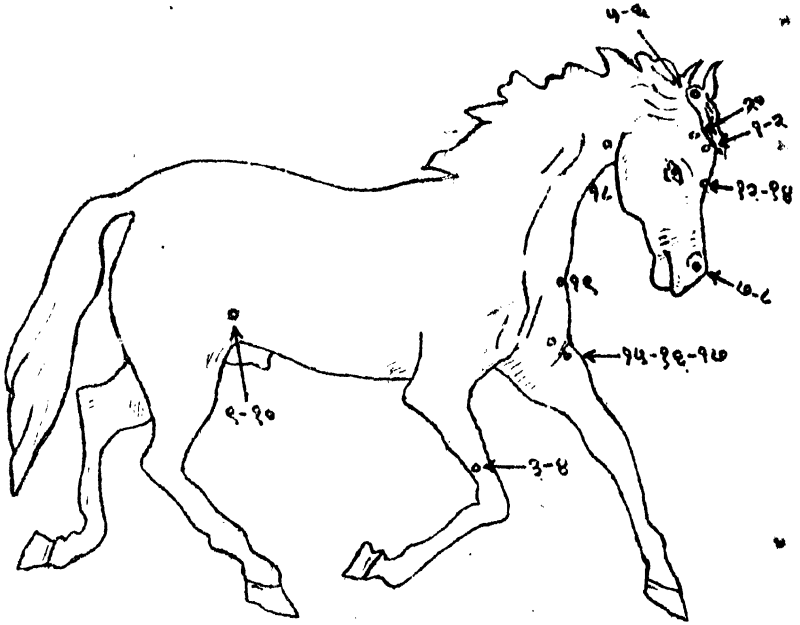
बीस शुभावर्त का विवरण।

१—२ केश पर—युद्ध में जय।

३—४ बाहु पर (भुजबल)—भूषण प्राप्ति।

५—६ कर्णमूल पर—अर्थसिद्धि।

७—८ नथुनों पर—मिष्टान्न पान।

९-१० उपरंध्र पर—इष्टकार्य सिद्धि, धान्यप्राप्ति, मित्र प्राप्ति।

११-१४ ललाट पर—युद्ध में जय।

१५-१७ उरस्थल पर—युद्ध में जय (उरस्थल के मध्य पर न होकर बाजू पर होना चाहिए)।

१८ गले पर (देवमणि)—राज्यप्राप्ति।

१९ कंठ पर (कंठमणि)—युद्ध में जय।

२० स्तुवा पर—युद्ध में जय।

चित्र ३

७६ निंद्यावर्त—यहाँ १ से २६ तक बतलाये गये हैं।
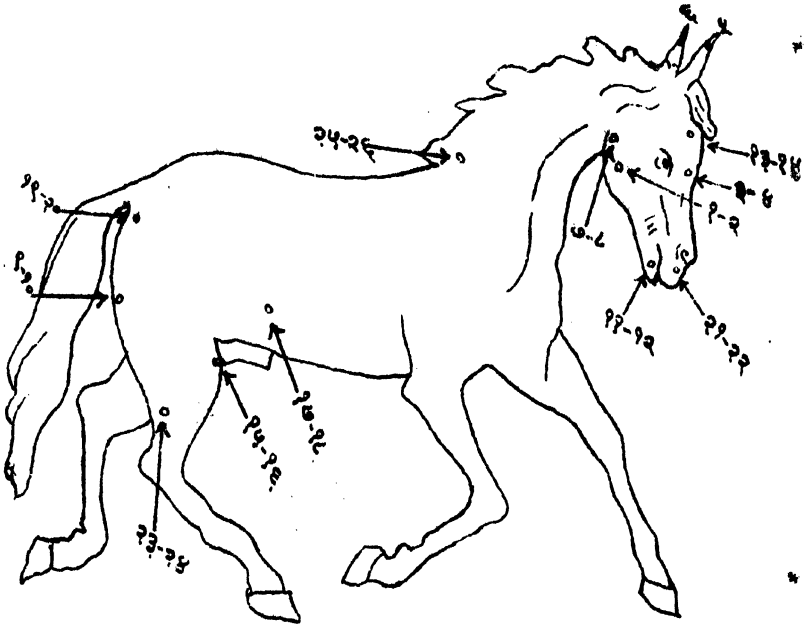
निंद्यावर्त विवरण ।

१—२ शंख पर—कुल का नाश ।
३—४ अश्रुपात (आँख पर)—कुल का नाश ।
५—६ कर्णाग्र पर—मंत्र दोष से हानि व मृत्यु ।
७—८ गंड पर—ज्येष्ठ पुत्र को हानि ।
९-१० स्थूर पर (डंक उजाड़)—युद्ध में मृत्यु ।
११-१२ हनुवटी पर—युद्ध में व घर पर मृत्यु का डर ।
१३-१४ भृकुटि पर—मित्र विरोध ।
१५-१६ वृषण पर—अल्पायु ।
१७-१८ कुक्षपर (भसमकूख)—स्वामी तथा परीक्षक का नाश ।
१९-२० स्फिक पिंड पर—विशेष हानि या दोष नहीं है ।
२१-२२ नासापुट पर—स्वामी व धन का नाश ।
२३-२४ जानु पर—युद्ध में घोड़ा ठोकर खायगा और स्वामी का नाश ।
२५-२६ मणि पर (साँपिन)—युद्ध व घर में स्वामी का नाश ।

चित्र ४

• ७६ निंघावर्त—२७ से ७६ तक दिखलाये गये हैं।
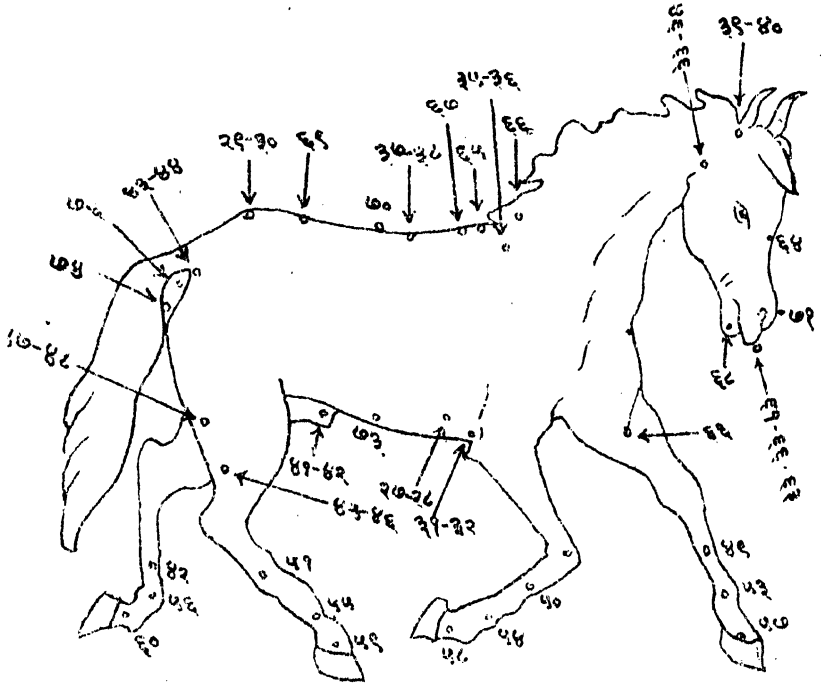
निंद्यावर्त विवरण

२७–२८ पार्थ पर—युद्धान्त में मृत्यु।

२९–३० ओम पर—बुरा फल।

३१–३२ कूख में (तंग तोड़)—युद्ध व घर पर मृत्यु।

३३–३४ कटि पर—उभय कुल नाश।

३५–३६ स्कंध पर—युद्ध व घर में मृत्यु।

३७–३८ बहा पर (आसन भंग)—कुमुद के समान अत्यन्त दूषित।

३९—४० मर्म बिन्दु पर—कार्य की असिद्धि।

४१—४२ मूत्र कोष पर—अंतःपुर में दोष।

४३—४४ पुच्छमूल पर —सर्वनाश।

४५—४८ चारों जाँघों पर—बन्धु वर्ग का बन्दी होना।

४९—५२ चारों पैरों पर—युद्ध व घर में मृत्यु।

५३—५६ चारों कुर्चिक पर—युद्ध व घर में मृत्यु।

५७—६० चारों कुष्टिक पर—युद्ध व घर में मृत्यु।

६१—६३ प्रयान पर—भाई को हानि।

६४ नासिका पर (गधा भौंरी)—युद्ध में पराजय।

*६५ कुकुद पर (छत्र भंग)—अत्यन्त दूषित--दर्शन भी नहीं करना चाहिये.

६६ क्रोड पर (हिरदावल)—युद्ध में मृत्यु व हृदय रोग से मृत्यु।

*६७ वह—कुमुद के समान अत्यन्त दूषित।

६८ उत्तरोष्ठ—माता तथा पिता की हानि।

६९ त्रिक—काँटा लगने से मृत्यु।

*७० आसन—बुरा फल।

*७१ प्रोथ के ऊपर के भाग पर—कुल का अन्त।

७२ गले पर—अन्न हानि।

७३ नाभि पर—सन्तान को व्याधि (तंग के नीचे दबने-वाले को 'गोंझ' कहते हैं)।

७४ सीवनी पर—घोड़ा दुखी होता है।

७५ काकस पर—स्वामी की मृत्यु होकर उसे पक्षी खायँगे।

७६ अपान पर—घोड़ा दुखी होगा।

---

*यह भ्रमर अत्यन्त दूषित हैं अतः इन पर विचार करना आवश्यक है।

चित्र—५.

चित्र ५

अस्थि व स्नायु सम्बन्धी।
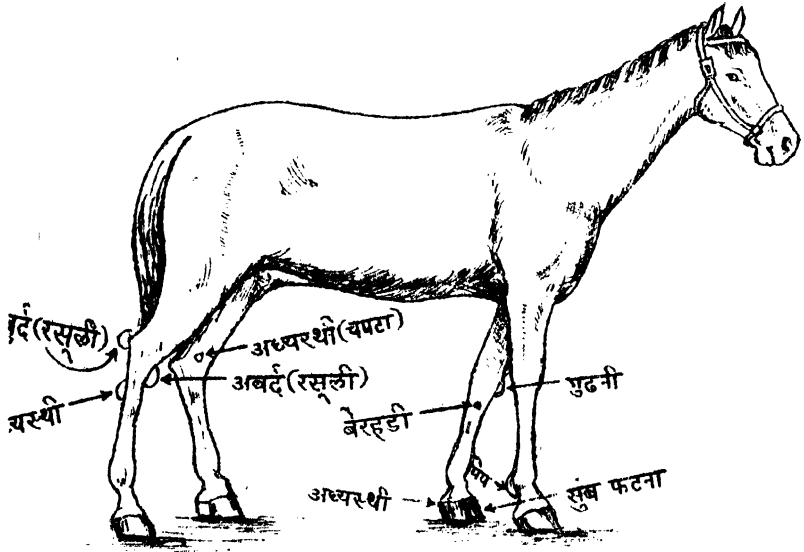
चित्र ५ का विवरण

---

१. अबुर्द (रसूली) (Hock or Elbow)
२. अध्यस्थि (Curb)
३. अबुर्द (रसूली) (Bog Spavin)
४. अध्यस्थि (चपटा) (Bone Spavin)
५. गुढगी (Capped Knee)
६. अध्यस्थि बेरहडी (Position of knee splint)
७. अध्यस्थि बेरहडी (Common position of Splint)
८. पेय (Common position of Sprained Tendon)
९. चक्रवाल (Common position of Ringbone)
१०. पेय (Strained ligaments Windgalls and sesamoditis)
११. अध्यस्थि (Side bone)
१२. सुंभ फटना (Sand Crack)
१३. अबुर्द (रसूली) (Capped hock)

चित्र ६

शुद्ध शारीरिक आकार का प्रमाण।
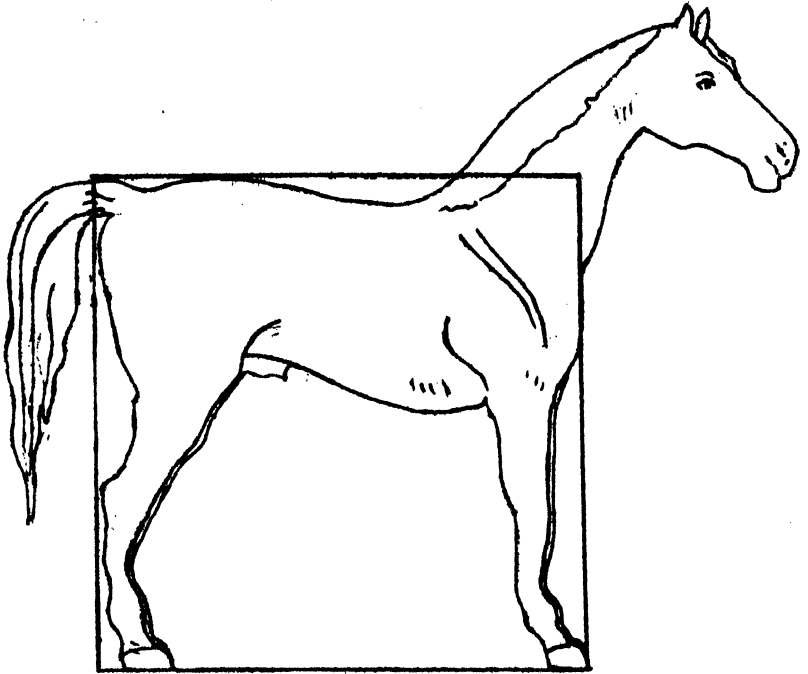
चित्र ७

आयु का पहला वर्ष ।
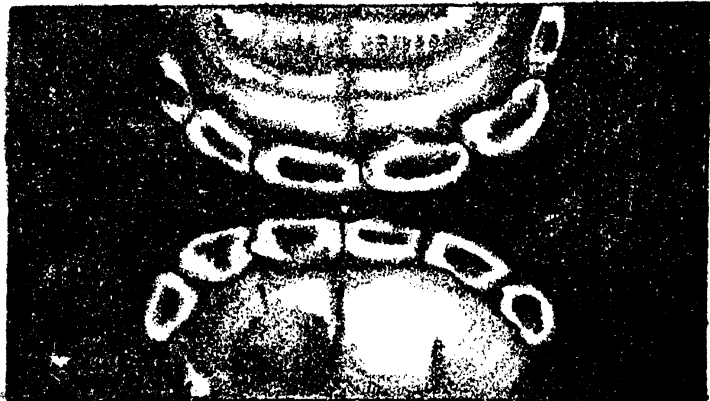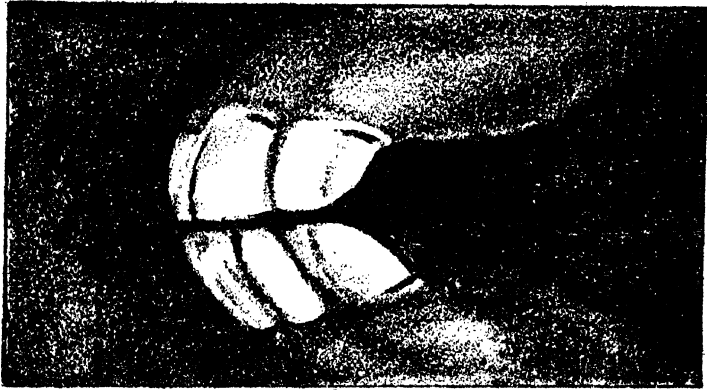
चित्र ८

आयु का दूसरा वर्ष ।
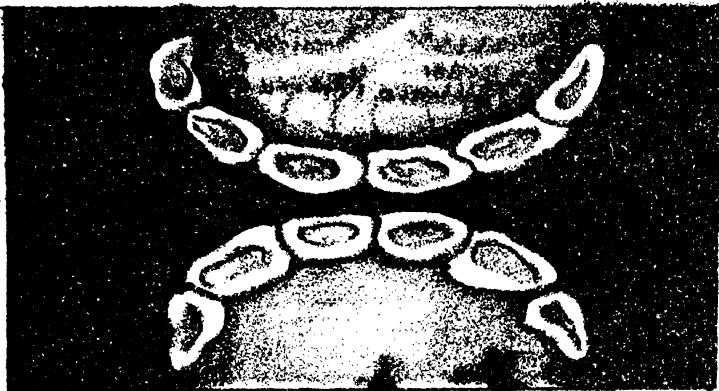
चित्र ९

आयु का तीसरा वर्ष ।
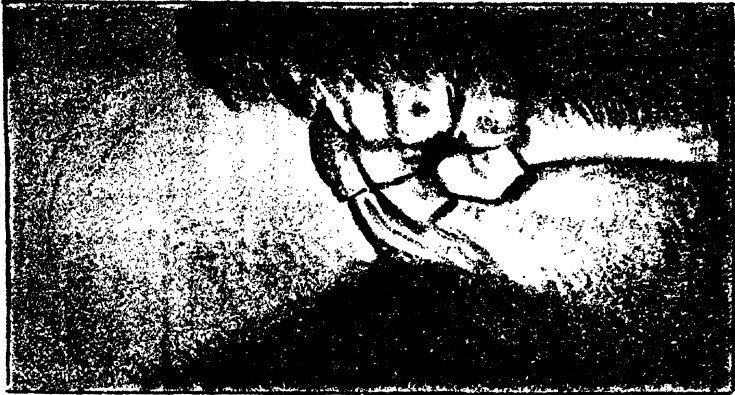
चित्र १०

आयु का चौथा वर्ष ।
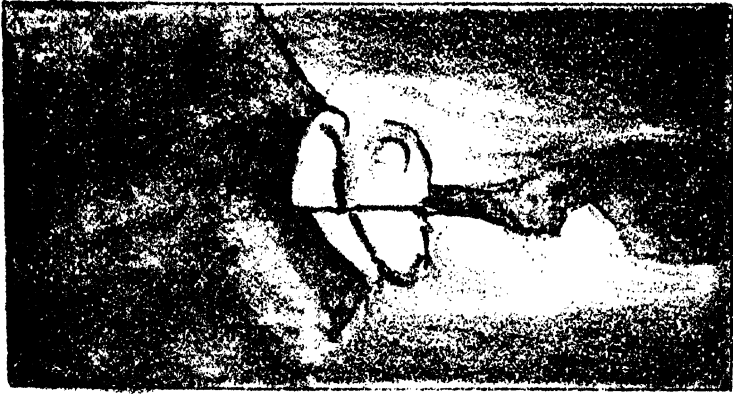
चित्र ११

आयु का पाँचवाँ वर्ष।
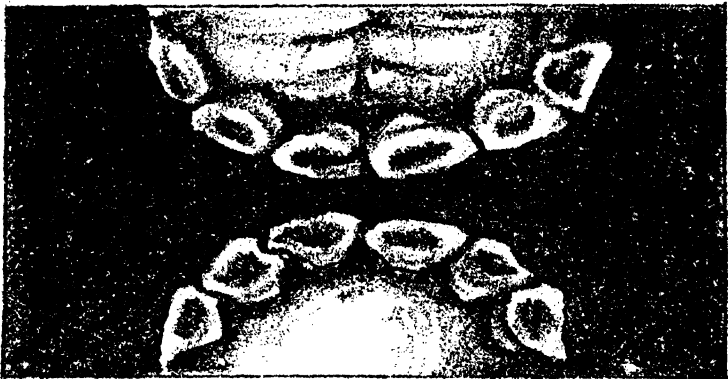
चित्र १२

आयु का छटवाँ वर्ष।
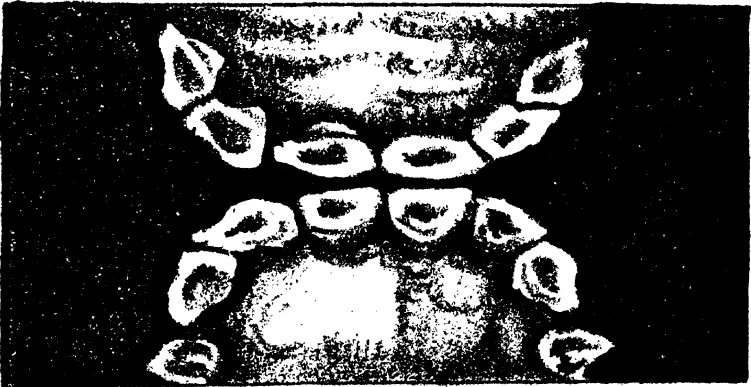
चित्र १३

आयु का सातवाँ वर्ष ।
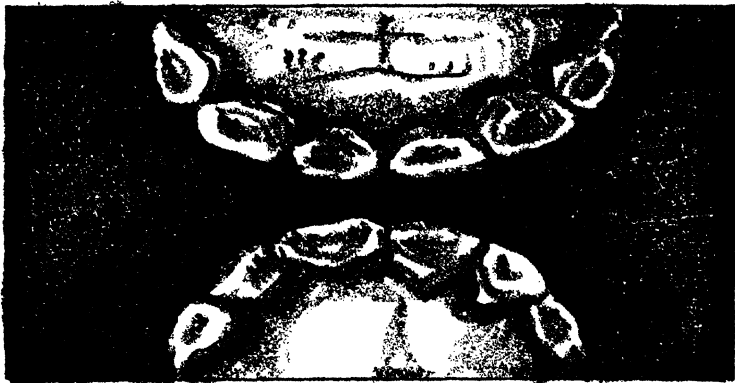
चित्र १४

आयु का आठवाँ वर्ष।
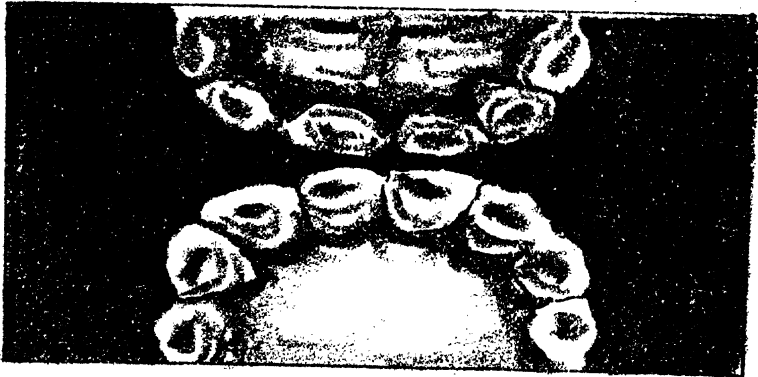
चित्र १५

आयु का दसवाँ वर्ष।
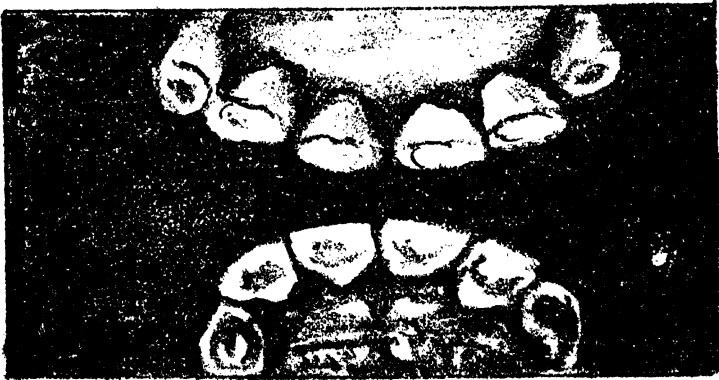
विद्यामंदिर-प्रकाशन

द्वारा

प्रकाशित तथा प्रचारित पुस्तकों का

सूचीपत्र

संवत् २००० वि०

प्रिय महोदय,

साथ में विद्यामन्दिर द्वारा प्रकाशित तथा उसके द्वारा प्रचारित पुस्तकों की सूची दी जा रही है। युद्ध के इस कठिन समय में जबकि कागद, छपाई आदि सभी अत्यन्त महँगे हैं हमने यह कार्य आपके सहयोग के सहारे हाथ में लिया है।

आशा है आप इन पुस्तकों की उपयोगिता देखते हुए इन्हें मँगाने की कृपा करेंगे तथा इनके प्रचार में सहायक होंगे।

निवेदक—

प्रबन्धक

विद्यामन्दिर-प्रकाशन,

मुरार (ग्वालियर राज्य).

विद्यामंदिर-प्रकाशन।

---

१. **नवयुग के गान**—हिन्दी के प्रख्यात कवि श्री. जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द' के प्राण-पूरित और सजीव गानों का संग्रह। कवि द्वारा उसकी कविताओं की प्रवृत्ति के विवेचन से विभूषित भूमिका तथा कवि के चित्र और परिचय सहित, एवं अन्य भावपूर्ण चित्रों से सुशोभित। मूल्य १।)

२. **श्री. सुमित्रानंदन पंत और गुंजन**—हिन्दी आलोचना-साहित्य में एक नवीन अध्याय। छायावाद, रहस्यवाद, और प्रगतिवाद को स्पष्ट करनेवाली प्रथम पुस्तक। पंतजी के काव्य का, विशेषतः गुंजन का मार्मिक विश्लेषण। मूल्य १॥)

३. **शान्ति-सुधा**—दाम्पत्य-जीवन पर प्राचीन दृष्टिकोण से किये गए विचारों का संग्रह। करेरा के नवयुवक वकील श्री. राधेश्याम द्विवेदी की रचना। मूल्य १)

४. **ग्राम-चिन्तन**—राजराजेन्द्र कर्नल मालोजीराव नृसिंहराव शितोले साहब के ग्राम-प्रेम से सभी परिचित हैं। पोहरी जागीर में होनेवाले ग्राम-सुधार के प्रयोग भारतवर्ष में आदर्श हैं। उन्हीं शितोले साहब के ग्रामों के विषय में पुष्ट और प्रमाणिक विचारों की यह पुस्तक है। लेखक के अत्यन्त सजीव परिचय सहित। इस पुस्तक में ग्रामों की सभी समस्याओं पर विचार प्रकट किये गए हैं। पोहरी जागीर के हाथ बने कागद पर छपी। मूल्य १॥)

५. **अश्व-परीक्षा**—हिन्दी में अपने विषय की प्रथम पुस्तक। इसके लेखक राजराजेन्द्र कर्नल मालोजीराव नृसिंहराव शितोले अश्वशास्त्र के बहुत अच्छे ज्ञाता हैं। अनेक चित्रों से विभूषित पुस्तक का मूल्य २॥) मात्र।

६. **शासन-शब्द-संग्रह**.--हिन्दी के प्रसिद्ध पण्डित श्री. हरिहरनिवास द्विवेदी, एम. ए., एल-एल. बी., द्वारा संग्रहीत तथा राजराजेन्द्र कर्नल मालोजीराव नृसिंहराव शितोले द्वारा संपादित और ग्वालियर के श्रेष्ठतम विद्वानों द्वारा संशोधित यह कोष अपूर्व है। इसमें शासन-कार्य और विधानों में प्रयुक्त होने-वाले पारिभाषिक शब्दों का संग्रह तीन भागों में किया गया है। पहले भाग में हिन्दी पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द दिये गए हैं। दूसरे भाग में अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी पर्यायवाची शब्द हैं। और तीसरे भाग में अरबी-फारसी शब्दों के हिन्दी समानार्थी शब्द हैं। प्रारंभ में अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण आमुख है। इस प्रकार यह ग्रंथ अत्यन्त उपयोगी है और हिन्दी भाषा के विकास में एक ठोस प्रयास का परिणाम है। हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. बाबू श्यामसुन्दरदास, श्रद्धेय बा. पुरुषोत्तमदास टण्डन, आचार्य केशवप्रसाद मिश्र, डॉ. बाबूराम सक्सेना तथा अनेक विद्वानों द्वारा प्रशंसित। मूल्य ३)

७. **पृथ्वीराज की आँखें**.--हिन्दी के प्रसिद्ध कवि, आलोचक और नाटक-लेखक डॉ. रामकुमार वर्मा के एकांकी नाटकों का संग्रह। यह पुस्तक ग्वालियर के गौरव स्वर्गीय श्री. रमाशंकरजी शुक्ल 'हृदय' की स्मृति में प्रकाशित पुस्तक-माला का द्वितीय पुष्प है। इसकी आय हृदयजी के परिवार को अर्पित की जायगी। एकांकी नाटकों की श्रेष्ठता के लिये डॉ. रामकुमार वर्मा का नाम ही पर्याप्त है। यू० पी० बोर्ड की मैट्रिक परीक्षा के पाठ्यक्रम में नियत है। मूल्य १।)

८. **गीता-परिचय**.--इसके विद्वान लेखक ने अत्यन्त सरल भाषा में गीता माता के उपदेशों का सार प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक के द्वारा साधारण पढ़े लिखे व्यक्ति तथा विद्यार्थी भी गीता के तत्व को समझ सकेंगे। हाथ बने कागद पर छपी है। मूल्य ॥)

९. **ग्राम-पुस्तकालय-माला**.--यह सूचित करते अत्यन्त हर्ष है कि हमारी 'ग्राम-पुस्तकालय-माला' का प्रकाशन प्रारंभ हो गया है। हम इस पुस्तकमाला में १५० पुस्तकें देना चाहते हैं जो सब मिलकर ग्रामों का

'विश्वकोष' बन जायेंगी। अत्यन्त सरल और रोचक भाषा में अधिकारी लेखकों द्वारा लिखाई जाकर ये पुस्तकें प्रकाशित की जायँगी। अभी विनोबा भावे के आश्रम के सदस्य श्री शान्तिचन्द्र जी द्वारा लिखी चार पुस्तकें तैयार हो गई हैं। अन्य की प्रतीक्षा करें:—

(१) मधुमक्खी.. .. .. दो आने.

(२) जंगल .. .. ,,

(३) हमारा देश .. .. ,,

(४) सफाई .. .. ,,

हमारे द्वारा प्रचारित पुस्तकें।

१. **जीवन-संगीत**.—लेखक श्री. जगन्नाथप्रसाद 'मिलिंद'। कवि की पन्द्रह वर्ष की साहित्याराधना का फल। इस महान् कवि दार्शनिक की अनुपम कृतियों का कलापूर्ण संग्रह। सम्पूर्ण भारत के श्रेष्ठतम चित्रकारों के भावपूर्ण चित्रों से सुशोभित। मूल्य २)

२. **महात्मा कबीर**.—लेखक श्री. हरिहरनिवास द्विवेदी एम. ए., एल-एल. बी.। महात्मा कबीर का व्यक्तित्व, उनके सिद्धान्त तथा कवित्व की सर्वोत्तम तथा सर्वांगीण विश्वलेषणात्मक समालोचना। हिन्दी की सर्वोच्च परीक्षाओं के पाठ्य-क्रम में नियत एवं ग्वालियर राज्य द्वारा पुरस्कृत। तृतीय संस्करण। मूल्य १)

३. **हिन्दी साहित्य का इतिहास**.—लेखक सौ. विद्यादेवी द्विवेदी, 'विशारद'—मध्यम आकार में हिन्दी साहित्य के इतिहास की संपूर्ण और प्रामाणिक जानकारी देनेवाली सर्वश्रेष्ठ पुस्तक। छोटे इतिहास खरीद कर अपनी इतिहास की जानकारी अधूरी न रखें, साथ ही बड़े इतिहासों के व्यर्थ के विस्तार से बचें। मूल्य २॥)

४. **अश्वपरीक्षा (मराठी)**—लेखक राजराजेन्द्र कर्नल मालोजीराव नृसिंहराव शितोले। मूल्य ३)

विद्यामंदिर प्रकाशन ।

—संक्षेप में—

'श्री सुमित्रानंदन पंत और गुंजन' पर कुछ सम्मतियाँ ।

श्री. नरोत्तमदास जी स्वामी, एम. ए. विद्यामहोदधि, हिन्दी प्रोफेसर डूंगर कॉलेज, बीकानेर लिखते हैं:-

इस प्रकार की एक पुस्तक की आवश्यकता मैं बहुत दिनों से अनुभव कर रहा था। पुस्तक बहुत योग्यता से लिखी गई है। विद्यार्थियों के लिये सभी बातें संक्षेप में किन्तु स्पष्टतापूर्वक दी गई हैं। टीका भाग विशेष महत्वपूर्ण है। नवीन छायावादी ग्रन्थों की जो टीकायें मेरे देखने में आईं उनमें यह सर्वश्रेष्ठ है। कुछ स्थानों में मतभेद की गुंजायश हो सकती है पर सब मिलाकर टीका आदर्श है। छायावादी रचनाओं पर इस प्रकार की टीकाएँ प्रकाशित हो जायें तो छायावाद की दुर्बोधता दुर्बोधता न रह जाय। इस सफल रचना के लिये मैं लेखक का अभिन्दन करता हूँ। और आशा करता हूं कि प्रमुख छायावादी रचनाओं पर इसी प्रकार की सुन्दर टीकाएँ लिखकर वे हिन्दी पाठकों का, विशेषतः विद्यार्थियों का आशीर्वाद लाभ करेंगे।

श्री. महाराज नारायणजी कक्कड, एम. ए., मेयो कॉलेज अजमेर लिखते हैं:-

हिन्दी के आलोचना क्षेत्र में कवि की एक कृति को लेकर उसकी विवेचना करना प्रारंभ ही हुआ। पहली पुस्तक 'भक्त' की नूरजहां, दूसरी साकेत, तीसरी 'बापू' और चौथी 'गुंजन' है। उपरोक्त तीन पुस्तकों पर जो आलोचनायें लिखी गई हैं वह अधूरीसी प्रतीत होती हैं, उनमें हृदय पक्ष का कहीं पता नहीं लगता, परन्तु गुंजन की समालोचना में हृदय और मस्तिष्क दोनों का पूर्ण सहयोग है।

इस आलोच्य पुस्तक में लेखक ने कवि की जीवनी और उसकी अन्य कृतियों का परिचय तथा आधुनिक कविता की नवीनतम धारा की व्याख्या के रूप में ३२ पृष्ठ की भूमिका लिखी है। फिर कवि की उस पुस्तक का जिसने पंत की काव्य प्रवृत्ति को ही परिवर्तित कर दिया विवेचन है। अपनी इस आलोचना को लेखक ने कवि की विचारधारा, प्रकृति चित्रण, भाषा और शैली, छन्द तथा अलंकार में विभाजन करके व्याख्या की है। इस व्याख्या में कवि के साथ पूर्ण न्याय किया है, तथा बड़ी अधिकारपूर्ण भाषा में लिखा है। कवि की अन्तर्वृत्ति जो गुंजन में केन्द्रित है तथा कवि की सारी प्रतिभा का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है। उस चित्रण की भाषा प्रौढ़, सजीव और संयत है, उसमें स्वाभाविक धाराप्रवाह है। सारी पुस्तक प्राप्त होते ही पढ़ गया, बड़ा आनन्द मिला। एक भी ऐसा स्थल नहीं जहां जी ऊबने लगे।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता 'गुंजन' के गीतों की टीका और व्याख्या है। इन गीतों की विशेषता बतलाते हुए कवि ने टीका की है जिससे गीत का कोना कोना गूंजने लगता है। टीका की भाषा भी सरल और स्वाभाविक है। इस अंश से यह पुस्तक विद्यार्थियों के बड़े काम की है।

साहित्य भूषण सोमनाथ गुप्त एम. ए. हिन्दी प्रोफेसर, जसवन्त कॉलेज तथा संयोजक, हिन्दी कमेटी, अजमेर राजपूताना बोर्ड लिखते हैं:-

मैंने पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ा। इस प्रकार गंभीर और सूक्ष्म अध्ययन द्वारा ही हिन्दी के कवियों और लेखकों की रचनाओं का आदर शिक्षित समाज में हो सकता है। मुझे प्रसन्नता है कि द्विवेदीजी ने पंत सम्बन्धी अपने परिश्रम का फल प्रकाशित करना उचित समझा। 'आधुनिक कवि' माला में अपने सम्बन्ध में पंतजी ने जो कुछ कहा है उसके आधार पर उनकी कृति का यह विवेचन बड़ा सुन्दर है और सरल भाषा के कारण विद्यार्थियों के लिये भी परीक्षा की दृष्टि से यह उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। ऐसे साहित्यिक प्रकाशन पर आपको बधाई।

श्री रामलाल सवाल एम. ए. साहित्य शास्त्री, हिन्दी प्रोफेसर राजर्षि कॉलेज, अलवर, लिखते हैं:—

पुस्तक को मैंने आदि से अन्त तक पढ़ लिया है। यह पुस्तक वास्तव में एक भारी माँग की पूर्ति करती है। श्री द्विवेदीजी का यह प्रयत्न सफल हुआ है। श्री पंतजी के पाठकों को इस पुस्तक से विशेष सहायता पहुँचेगी। लेखक ने कवि के विचार, शैली एवं कला के उत्तरोत्तर विकास को विशद एवं रोचक रूप में समझाने का प्रयत्न किया है अतः न केवल गुंजन के बोधार्थ वरन् कवि के पंत के समस्त काव्यों के भावबोधन के लिये यह पुस्तक अत्यन्त सहायक सिद्ध होगी।

श्री कृष्णचन्दजी श्रोत्रिय एम. ए., बी. टी. हिन्दी अध्यापक महाराणा कॉलेज, उदयपुर, लिखते हैं:—

आद्योपान्त पढ़ने से प्रतीत हुआ कि यह आलोचनात्मक पुस्तक लेखक के गंभीर अध्ययन तथा सूक्ष्म बुद्धि की परिचायक है। आरम्भ में लेखक ने पंतजी के जीवन, अध्ययन एवं उनकी कृतियों पर प्रकाश डाला है।

तदनन्तर पंतजी की कविता से सम्बन्ध रखनेवाले वाद—'छायावाद, रहस्यवाद तथा प्रगतिवाद' समझाये गये हैं। छायावाद और रहस्यवाद का मध्यवर्ती भेद स्पष्टतापूर्वक समझाने का प्रयत्न किया गया है जो प्रायः बहुतसों को अस्पष्ट रहता है और जिसके परिणामस्वरूप वे दोनों को समानार्थी मान बैठते हैं।

पुस्तक के अन्त में इण्टरमिडियेट परीक्षा के नियत गानों की सुबोध टीका की गई है जिससे पंतजी की विचारधारा, दार्शनिकता और कवित्व सौन्दर्य सहज में बोधगम्य हो जाते हैं। गुंजन का अध्ययन करनेवालों, विशेषकर विद्यार्थियों के लिये यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी तथा आवश्यक है। समालोचनात्मक साहित्य में भी इस पुस्तक को विशेश महत्व है।

श्री. म. प्र. अग्रवाल, हिन्दी प्रोफेसर रीवाँ कॉलेज लिखते हैं:-

मैं 'श्री सुमित्रानन्दन पंत और गुंजन' नामक पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ गया हूँ। 'गुंजन' की विस्तृत आलोचना गंभीर, स्पष्ट और विद्वत्तापूर्ण है। व्याख्या के बाद जो विभिन्न गीतों की टीका दी गई है उससे छायावादी कविताओं के समझने में विशेष सहायता मिलेगी। पुस्तक विद्यार्थियों के बड़े काम की है। इण्टर के छात्रों को इससे पूरा लाभ उठाना चाहिये।

श्री. हरीराम जी तिवारी, एम. ए. हिन्दी प्रोफेसर, हर्बर्ट कॉलेज, कोटा, लिखते हैं:-

पुस्तक उत्तम है। सरल और प्रवाहमयी भाषा में की गई कविवर पंतजी की विवेचना विशद, सुन्दर और उपयोगी है। परीक्षार्थियों के लिये तो लाभप्रद है ही, हिन्दी-प्रेमियों के लिये भी यह पठनीय है। श्रीयुत् द्विवेदीजी का यह प्रयास स्तुत्य है। आशा है हिन्दी जगत इस पुस्तक का उचित आदर करेगा।

श्री. सुधीन्द्र, एम. ए., हिन्दी अध्यापक, वनस्थली कॉलेज, बनस्थली लिखते हैं:-

श्री. सुमित्रानंदन पंत और गुंजन मेरे मन की वस्तु है। कहने की आवश्यकता नहीं कि उसने मेरे बहुतसे कार्य को हलका कर दिया है। अपनी छात्राओं को मैंने यही पुस्तक पढ़ने के लिये दे दी। गुंजन पर अधिक ही लिखा जा सकता था इससे कम तो किसी दशा में नहीं, भाई हरिहरनिवासजी तक मेरी बधाई पहुंचा दीजिये।

श्री. सूर्यदेव शर्मा, एम. ए. एल-टी. प्रिन्सिपल डी. ए. वी. कॉलेज अजमेर लिखते हैं:-

पुस्तक देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। विषयों का उपक्रम, क्रम तथा निर्वाचन सब कुछ समीचीन है। 'छायावाद और पंत' रहस्यवाद तथा प्रगतिवाद नामक शीर्षकों में श्रीपंतजी के जिन आधुनिक विचारों का विवेचन किया गया है, वह बहुत ही सुन्दर बन पड़ा है।

श्री० ब्रह्मदत्त शर्मा एम० ए० हिन्दी अध्यापक महाराजा कॉलेज छतरपुर लिखते हैं:-

रचनाओं के विकास-सूत्र के समझने में लेखक का वर्गीकरण समुचित सहायता करता है।

हम इस पुस्तक का अभिनन्दन करते हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में लेखक की और भी रचनायें हिन्दी जगत को प्राप्त होंगी।

शासन-शब्द-संग्रह के विषय में हिन्दी के मान्य विद्वानों की कुछ सम्मतियाँ

भारत-गौरव राष्ट्र-कवि श्री मैथिलीशरणजी गुप्तः--

आपने इतना बड़ा काम किया है, जिसपर गर्व किया जाय। आशा है राज्य की ओर से सका यथेष्ट प्रचार किया जायगा। स्कूलों में, लायब्रेरियों में, गाँव गाँव में इसे पहुँचाना चाहिये।

हिन्दी की बहुत बड़ी सेवा आप लोग कर रहे हैं।

श्रद्धेय बाबू पुरुषोत्तमदासजी टण्डनः---

शब्द-संग्रह जो आपने तैयार किया है, वह मेरा पूरा विश्वास है हिन्दी संसार के उपयोगी सिद्ध होगा।

आचार्य डॉ० श्यामसुन्दरदासजीः--

मेरी समझ में यह कार्य योग्यतापूर्वक किया गया है और सर्वथा सफल हुआ है।

श्री डॉ० बाबूरामजी सक्सेना एम. ए., डी. लिट्, प्रयाग-विश्वविद्यालयः--

ग्वालियर-राज्य में इस कार्य को हाथ में लेकर बड़ा उपकार किया है और महाराज साहब तथा सम्पादक आदि विशेष साधुवाद के पात्र हैं। संग्रह के मूल नियम मुझे सर्वथा मान्य जँचे।

वजीरुद्दौला रायबहादुर सरदार माधवराव विनायकराव किबे, एम. ए.:—

यह ग्रंथ महाराजा शिन्दे सरकार के राज्य को ही नहीं, सब राज्यों के लिए मार्गदर्शक एवं अत्यन्त उपयुक्त प्रतीत होगा। "आमुख" में प्रदर्शित किये विचारों से मैं पूर्णतया सहमत हूँ। इसे सब भारतीय शासन संस्थायें अपनायेंगी ऐसी मैं आशा करता हूँ। इसमें बंगाली आदि अन्य भाषाओं में अनुकरण करने का मैं समर्थन करता हूँ।

श्री भगवानदासजी केला, एम. ए., भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयागः—

आपके इस कार्य की मैं हृदय से सराहना करता हूँ। अपनी दिशा में इसकी उपयोगिता स्पष्ट है। आशा है न केवल ग्वालियर की जनता और अधिकारी ही वरन् अन्य प्रान्तों के निवासी इससे यथेष्ट लाभ उठावेंगे।

श्री कृष्णलाल शरसौदे, हिन्दी साहित्य सम्मिति, बैतूलः—

आपका प्रयत्न सर्वथा स्तुत्य है और इन दिनों जबकि हम 'हिन्दी' को एक सार्वभौम भाषा बनाने जा रहे हैं तब इस प्रकार के ग्रंथ की आवश्यकता और भी अनिवार्य हो जाती है।

श्री मध्य-भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन

कार्यालय इन्दौर.

सरस्वती निकेतन,
तारीख ६ अगस्त सन १९४२ ई०.

श्रीमान कर्नल राज राजेन्द्र शीतोले साहब,
ग्वालियर राज्य।

श्रीमान्

श्रीमध्य-भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन श्रीमान कर्नल राज-राजेन्द्र शीतोले को उनके 'शासन शब्द कोष' के सम्पादन पर बधाई देता है। इस कोष से देश की बड़ी आवश्यकता की पूर्ति हुई है, क्योंकि यह कोष जिस प्रकार मध्य-भारत के लिये उपयोगी है अन्य प्रान्तों के लिये भी उसी प्रकार लाभप्रद हो सकेगा।

सम्मेलन आशा करता है कि श्रीमान सरदार साहब की संरक्षता में इसी प्रकार का साहित्य निर्माण होता रहेगा और हिन्दी भाषा के प्रचार में उनसे इसी प्रकार निरन्तर सहायता मिलती रहेगी।

सम्मेलन की यह कार्यकारिणी की बैठक सम्बन्धित संस्थाओं को आदेश करती है कि वह अपने अपने क्षेत्रों में इस उपयोगी पुस्तक का प्रचार करे जिससे कि उपयुक्त शब्दों के अभाव में हिन्दी की प्रगति कई स्थानों में रुक रही है—वह अब न रुकी रहे।